इकाई 5 पञ्चांग की उपयोगिता

इकाई की संरचना

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 पञ्चांग की उपयोगिता

5.3.1 पञ्चांग की विशेषतायें

5.3.2 पञ्चांग की आवश्यकता एवं महत्त्व

5.4 तिथि एवं वारों में कृत्याकृत्य विचार

5.4.1 नक्षत्र, योग एवं करणों में कृत्याकृत्य विचार

5.5 सारांश

5.6 पारिभाषिक शब्दावली

5.7 बोध प्रश्न

5.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.0 उद्देश्य

इस इकाई लेखन के निम्न उद्देश्य हैं –

- अध्ययनोपरान्त आपको पञ्चांग का बोध हो जायेगा।
- पंचांग के महत्त्व को समझ लेंगे।
- पंचांग की उपयोगिता को बता सकेंगे।
- मानव जीवन में पञ्चांग के प्रत्यक्ष रूप से क्या उपयोग हैं, इसका बोध हो जायेगा।
- पंचांग के विविध रूपों का वर्णन करने में आप समर्थ हो जायेंगे।

5.1 प्रस्तावना

एम.ए. ज्योतिष तृतीय पाठ्यक्रम के प्रथम खण्डान्तर्गत पॉचवीं इकाई में आप सभी ज्योतिष शास्त्र के अध्येताओं का स्वागत है। प्रस्तुत इकाई का शीर्षक है – पंचांग की उपयोगिता। इसके पूर्व की इकाईयों में आपने पंचांग का स्वरूप, संक्षिप्त इतिहास, उसकी परम्परा, भेदादि का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में पंचांग की उपयोगिता के बारे में अध्ययन करने जा रहे हैं।

पंचांग ज्योतिष शास्त्र का प्राण माना जाता है। ज्योतिष शास्त्र का समस्त सारतत्व पंचांग में ही समाहित होता है। अतः इसकी उपयोगिता इससे और भी बढ़ जाती है। पंचांग का सम्बन्ध आम जनमानस के दैनिक जीवन के क्रियाकलापों से जुड़ा है। इसलिए पंचांग की उपयोगिता सार्वकालिक अक्षुण्ण है। पंचांग के नियमित अवलोकन से आम व्यक्ति भी ज्योतिषशास्त्र के ज्ञान में प्रवृत्त हो जाता है। यह पंचांग का वैशिष्ट्य है। मानव जीवन के आद्योपान्त (जन्म से मृत्यु पर्यन्त) समस्त शुभाशुभ काल निर्धारण में सहायक होता है यह पंचांग। वैदिक सनातन परम्परा के समस्त

व्रत–पर्व–उत्सव–शुभाशुभ मुहूर्त्तों का समावेश एक ही स्थल पर कहीं प्राप्त होता है तो वह स्थल है – पंचांग। इसलिए मानव जीवन में व्यवहारोपयोगी होता है पंचांग।

अतः आइए हम सभी पंचांग की उपयोगिता वह उसके महत्त्व के बारे में विस्तृत अध्ययन करते है।

5.2 पंचांग की उपयोगिता

पंचांग को पत्रा, पतरा पत्री, जन्त्री, कालदर्शक, कैलेण्डर, टिपणो, इफिमेरिज आदि के नाम से भी जाना जाता है। अंग्रेजी का 'कैलेण्डर' शब्द संस्कृत भाषा के कालन्धर शब्द का अपभ्रंश हैं। संस्कृत व्याकरण के अनुसार – कालं धारयति इति कालन्धरः, अर्थात् जो काल अथवा समय को धारण करता है या जिससे काल के अवयवों का ज्ञान होता है, उसे 'कालन्धर' कहते हैं। इस प्रकार पंचांग काल को बताने वाला होता है। पाँच अंगों का समवेत स्वरूप ही 'पंचांग' कहलाता है। उन पाँच अंगों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं – तिथि, वार, नक्षत्र योग एवं करण। इन पाँचों अंगों के आधार पर ही किसी भी शुभकार्य हेतु शुभाशुभ समय का निर्णय किया जाता है। पंचांग की परिभाषा और महिमा का वर्णन करते हुए संवत्सरावलीकार कहते है कि –

तिथिर्वारं च नक्षत्रं योगः करणमेव च।
पंचांगस्य फलं श्रुत्वा गंगास्नान फलं लभेत्।।(विश्वविद्यालय...मुख्य पृष्ठ)

श्लोक में आचार्य का कथन है कि तिथि–वार–नक्षत्र–योग एवं करण की समष्टि को 'पंचांग' कहते हैं। पंचांग फल श्रवण करने से गंगास्नान का फल प्राप्त होता है। पंचांग श्रवण (सुनने) का फल एवं उसकी महत्ता के बारे में आगे भी आचार्य कहते हैं कि –

लक्ष्मीः स्यादचला तिथिश्रवणतो वारात्तथायुश्चिरम्।
नक्षत्रं कृतपापतापशमनं योगो वियोगापहः।।
सर्वाभीष्टकरं तथैव करणं पंचांगमेवं स्फुटं।
श्रोतव्यं गणकाननात्प्रतिदिनं श्रेयस्करं सिद्धिदम्।।
(विश्वविद्यालय ..... मुख्य पृष्ठ)

अर्थात् तिथि के फल को सुनने से अचल लक्ष्मी की प्राप्ति होती है, वार के फल सुनने से आयु की की वृद्धि होती है। नक्षत्र फल श्रवण से मनुष्य के किये हुए पाप के ताप से मुक्ति होती है, योग फल सुनने से वियोग दुःख का नाश होता है, करण फल सुनने से अभीष्टों की प्राप्ति होती है। इन्हीं पॉच पदार्थों को पंचांग कहते हैं। ज्योतिषी के मुख से इनका फल सदा श्रवण करने से सर्व प्रकार की सिद्धियॉ प्राप्त होती है।

अन्य मतानुसार भी पंचांग की उपयोगिता तथा महत्त्व निम्न प्रकार से दर्शाया गया है–

तिथेस्तु श्रियमाप्नोति वारादायुष्यवर्धनम्।
नक्षत्रात्तरते पापं योगाद्रोगनिवारणम्।।
करणात्कार्यसिद्धिश्च पंचांगफलमुत्तमम्।
कालवित्कर्मविद्धीमान्देवतानुग्रहं लभेत्।।

अर्थात् काल तथा कर्म के ज्ञाता व्यक्ति को पंचांग के पॉचों अंगों का विवेकपूर्ण उपयोग करके देवताओं का अनुग्रह प्राप्त करना चाहिये। तिथि का सदुपयोग करने से अर्थात उसके अनुसार कृत्य करने से 'श्री' की प्राप्ति होती है इसका मतलब

धन–सम्पत्ति मिलती है। वारों का ठीक प्रकार से उपयोग करने पर आयुष्य बढ़ता है अर्थात् दीर्घायु मिलती है। नक्षत्र के सत्प्रयोग से पाप क्षीण हो जाते हैं, मन के कल्मष धुल जाते हैं। योगों का ठीक प्रकार से उपयोग रोगों एवं कष्टों से मुक्ति दिलाता है। इसी प्रकार पंचांग का पॉचवॉ अंग करण कार्यसिद्धि में सहयोग करता है।

तात्पर्यार्थ है कि तिथियों का वास्तविक उपयोग दैनिक जीवन के व्रत–पर्वों एवं अनुष्ठानों में होता है। वारों के अनुसार अपनी दिनचर्या रखने से दीर्घायु की प्राप्ति होती है, क्योंकि रविवार को नमक का सेवन नहीं करना, रवि, मंगल, गुरू – इन वारों में तैलाभ्यंग नहीं करना – ये सभी बातें आयुर्वेद के मत से दीर्घायुकारक होती है। संस्कारों को करने में नक्षत्रों का पूरा–पूरा महत्त्व है, जिससे मनुष्य को पापों से बचाकर वास्तव में मनुष्य बनाया जाता है। योग विघ्न–बाधाओं को दूर करते हैं। सुयोग में किया गया कर्म सुविधापूर्वक सम्पन्न होता है। करण, जो कि पॉचवॉ अंग है, उसके अनुसार कार्य करने से सफलता असन्दिग्ध हो जाती हैं।

पंचांग के अंग हमें जहॉ शुभाशुभ समय का ज्ञान करातें हैं वहीं हमें आकाश दर्शन में भी सहायक होते हैं। इन अंगों के निरूपण के साथ–साथ ग्रहों की गति, स्थिति एवं चार का ज्ञान पंचांग के माध्यम से अत्यन्त सरल ढंग से किया जाता है। इसलिए आवश्यक हो जाता है कि आकाशीय घटनाओं के साथ–साथ उनके परिणामों का भी उल्लेख कर आम जनमानस को अवगत कराया जा सके। इस दृष्टि से ज्योतिष के सिद्धान्त, संहिता एवं होरा स्कन्धों के अनेक व्यावहारिक विषयों का समावेश आधुनिक भारतीय पंचांगों में होने लगा है। आज पंचांग ज्योतिष सम्बन्धी अनेक विषयों का महत्वपूर्ण संकलन भी है। यदि कोई व्यक्ति केवल पंचांगों का ही अध्ययन कर ले तो वह अनेक व्यावहारिक विषयों का ज्ञाता हो सकता है। यही कारण है कि आज पंचांग हमारी जीवन पद्धति के अंग बन चुके हैं।

वैदिक सनातन परम्परा के समस्त व्रत, पर्व, उत्सव, शुभाशुभ कार्य, जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त किया जाने वाला समस्त संस्कार का उल्लेख, लग्न ज्ञान, ग्रहगणित, ग्रहणादि विवेचन, संवत्सरादि का फल, समस्त विश्व से सम्बन्धित शुभाशुभ फल आदि का विवेचन हमें पंचांग से प्राप्त हो जाता है। इसीलिए पंचांग मानवमात्र के लिए और उपयोगी हो जाता है। पंचांग का निर्माण प्रतिवर्ष किया जाता है, जिसमें प्रतिदिन के तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के विवेचन के साथ–साथ दैनिक लग्न, ग्रहगति–स्थिति, शुभाशुभ मुहूर्त्तो का समावेश रहता है। इनमें से प्रत्येक का अलग–अलग विवेचन सर्वदा कठिन होता है। अतः पंचांगकारों द्वारा उक्त विषयों का समावेश आम जनमानस के सुविधा एवं कल्याण के लिए एक ही स्थल 'पंचांग' में कर दिया जाता है।

उदाहरण के लिए यदि किसी का बालक अथवा बालिका का जन्म हुआ है? तो किस लग्न में, किस नक्षत्र में हुआ है? उसका जीवन कालखण्ड कैसा रहेगा? बालारिष्ट योग है क्या? मूल में तो पैदा नहीं हुआ है? इत्यादि अनेक प्रश्न जन्मकाल के समय में उठने लगते है? इन सभी प्रश्नों का उत्तर ज्योतिषी केवल पंचांग में जन्मकाल के आधार पर जान लेता है और जिज्ञार वाले को बता देता है। इसी प्रकार जन्म के पश्चात् नामकरण, अन्नप्राशन, भूम्युपवेशन, दोलारोहण, दन्तोत्पत्ति फल, यज्ञोपवीत संस्कार, अक्षराम्भ–विद्यारम्भ संस्कार, विवाह संस्कार, गृहारम्भ–गृहप्रवेशादि संस्कार, अन्त्येष्टि आदि समस्त प्रमुख संस्कारों का मुहूर्त्त पंचांगों में दिया रहता है। आकाशीय घटनाओं का विवरण यथा – ग्रहणादि का विवेचन भी प्रत्येक वर्ष के अनुसार पंचांग में लिखा रहता है। विश्व एवं देश की वार्षिक स्थिति कैसी रहेगी? इन सभी बातों का उल्लेख पंचांग में दिया रहता है। पंचांग केवल किसी व्यक्ति विशेष का ही नहीं अपितु सार्वभौमिक रूप से मानवमात्र के लिए है, क्योंकि सभी धर्मो के लिए भी अलग–अलग उनकी परम्पराओं के अनुसार भी , संवत्सरादि एवं व्रत–पर्व का उल्लेख किया जाता है

पंचांग में। इससे इसकी महत्ता और भी ज्यादा बढ़ जाती है। इस प्रकार आप सभी देख व समझ सकते हैं कि पंचांग का कितना उपयोग है मानव जीवन में।

5.3.1 पंचांग की विशेषताएँ

भारतीय पंचांगों में निम्न विशेषतायें हैं, जो संसार के किसी भी अन्य पंचांगों अथवा कैलेण्डरों में नहीं हैं –

1. **धर्मकेन्द्रत्व** – भारतीय पंचांग का निर्माण केवल आकाशीय चमत्कार देखने–दिखाने के लिये नहीं, अपितु मानव को मानव बनाने के लिये धर्म के दस लक्षणों के पालनार्थ किया जाता है। संस्कार ठीक समय पर सम्पन्न हों, इसे ध्यान में रखते हुए पंचांग निर्माण किया जाता है। पंचांग का निर्माण धर्मप्राण जनता के कल्याणार्थ और वैदिक सनातन परम्परा के विकासार्थ किया जाता है।

2. **सर्वपन्थ –समभाव** – भारत में हिन्दू धर्म (सनातन) के अन्तर्गत अनेक मत–मतान्तर हैं। भारतीय पंचांगों में उन सभी मतों के साथ समभाव रखते हुए उनके व्रत, पर्व, उत्सवादि का उल्लेख पंचांग में किया जाता हैं। इसके साथ–साथ ईसाई, सिक्ख, मुस्लिम, यहूदी, जैन–बौद्ध तथा पारसियों का व्रत त्योहार भी प्रत्येक भारतीय पंचांग में दिया रहता है। अरबी, फारसी, फसली, बंगाली, राष्ट्रिय तिथियों का उल्लेख भी पंचांगों में उद्धृत रहता है।

3. **वैज्ञानिक अवधारणा** – भारतीय पंचांग का निर्माण वैज्ञानिक अवधारणा के साथ होता है। कहॉ सायन गणना उपयोगी है और कहॉ पर निरयण गणना ? यह सभी ध्यान में रखकर पंचांग निर्माण का कार्य होता है।

4. **समन्वय एवं समरसता** – जितने प्रकार की (सौर, चान्द्र, सावन, नाक्षत्र) गणनायें है, उन सभी का समन्वय करके भारतीय पंचांग का निर्माण होता है, जिसके कारण राष्ट्रीय एकता सृदृढ़ रहती है।

5. **परिपूर्णता** – ईसाईयों का पंचांग केवल सौरगणना पर आधारित होता है। मुसलमानों का काल केवल चान्द्रगणना पर आधारित होता है एवं पारसियों का सावन गणना पर आधारित होता है, परन्तु भारतीय पंचांग में ये सभी गणनायें उपलब्ध हैं। उससे सभी धर्मावलम्बियों तथा विश्व की जनता के कार्यकलाप चल सकते हैं। इतनी पूर्णता किसी देश के पंचांगों में नहीं होती है।

इस प्रकार भारतीय पंचांगों का यह वैशिष्ट्य है कि वह सर्वतोभावेन पथप्रदर्शक का कार्य करता है। उसमें निहित तत्व सर्वविधकल्याण के लिए होते हैं जो अत्यन्त मंगलकारी होता है। हम जानते है कि भारतवर्ष विविधताओं का देश है फिर भी सभी को एकसूत्र में पिरोने का कार्य 'पंचांग' के माध्यम से किये जाने का प्रयास शास्त्रकारों का रहता है। यही शास्त्र की भी महत्ता है।

5.3.2 पंचांग की आवश्यकता एवं महत्त्व

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादास्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ।।

इस उक्ति के अनुसार ज्योतिषशास्त्र प्रत्यक्ष शास्त्र है और इसकी गणनाओं का मूलाधार सूर्य एवं चन्द्रमा की स्थिति रहा है। प्राचीनकाल से ही ज्योतिष का प्रथम सम्बन्ध खगोल से रहा है। खगोलीय पिण्डों के साथ मानव के तादात्म्य सम्बन्ध का पक्षधर ज्योतिषशास्त्र फलित के अन्तर्गत मानव पर पड़ने वाले उसके प्रभाव का विवेचन करता

है। हमारे सौरमण्डल में सभी ग्रह कक्षा में सूर्य के चारों ओर भ्रमण करते हैं और वैदिक काल से ही विद्वान इन ग्रहों की गति, युति व प्रभावों का अध्ययन करते रहे हैं, और आकाशीय चमत्कारों से अभिभूत होते रहे हैं। सृष्टि के प्रारम्भ में खगोलीय ग्रह नक्षत्रों की स्थितियों ने मनुष्य को उलझन में डाल दिया था और तभी से मनुष्य ने इनके रहस्य को समझने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया था। मनुष्य व्यवहार के साधनभूत कालमान आकाशीय पिण्डों के चमत्कारों एवं गति पर ही अवलम्बित है। खेती के लिए ऋतुओं का ज्ञान आवश्यक है और ऋतु ज्ञान सूर्य पर आधारित है। वर्षा भी सूर्य के कारण ही होती है। प्रकृति में होने वाले विक्षोभों की सूचना इन ग्रहों की विविध स्थितियों से ही प्राप्त होती है। सृष्टि के प्रारम्भ से ही मनुष्य आकाशस्थ ज्योति के चिन्तन में संलग्न है लेकिन इस ज्ञान को शास्त्र का रूप प्राप्त करने में ही काफी लम्बा समय लगा। वैदिक वांङ्मय में ज्योतिषीय ज्ञान यत्र–तत्र बिखरा सा उपलब्ध होता है क्योंकि वे ज्योतिष के ग्रन्थ नहीं थे, वेदांग काल में आते आते ज्योतिष ने शास्त्र का आकार प्राप्त किया और वेदों को जानने के लिए ज्योतिषशास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता प्रतीत की जाने लगी और ज्योतिष को वेद पुरूष का 'नेत्र' कहा गया। इसलिए भास्कराचार्य जी ने भी स्वग्रन्थ सिद्धान्तशिरोमणि में कहा है –

वेदश्चक्षुः किलेदं स्मृतं ज्योतिषम्।

प्रकृति की गोद में रहने वाला प्रारम्भिक मनुष्य तो साक्षात् आकाश में ग्रह आदि की स्थिति देखकर ही काल विषयक अनुमान लगा लेता था। धीरे–धीरे ग्रह गतियों की विवेचना एवं गणना सम्बन्धी ग्रन्थों का निर्माण हुआ और आम व्यक्ति इन ग्रन्थों के माध्यम से ही ग्रहों की स्थिति का अनुमान करने लगा। पंचांग निर्माण मनुष्य की इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु किया जाने लगा कि मनुष्य पंचांग के माध्यम से ही ग्रहों की स्थिति, गति व उनके तुल्य होने वाले परिवर्तनों को जान ले। पंचांग निर्माण की अनेकानेक विधियाँ यथा केतकी, ग्रहलाघव, सूर्यसिद्धान्त आदि पर आधारित गणना पद्धति देश में प्रचलित रही हैं और उसके भी नाना भेद सायन, निरयन, सौर, दृक् आदि प्रचलित रहे हैं। प्रत्येक पद्धति से पंचांग निर्माण में कुछ न कुछ भेद अवश्य उपस्थित होता है। लम्बे समय तक दृक्पक्षीय व सौरपक्षीय पंचांगों में विवाद की स्थिति बनी रही और उनकी गणनाओं के अन्तर के कारण उस पर आधारित व्रत, पर्व आदि के निर्णयों में भी विवाद की स्थिति बन गई आज अधिकांश लोग दृक्पक्षीय पंचांगों को स्वीकार करने लगे हैं।

सम्पूर्ण विश्व में सभी मनुष्य सुख की अभिलाषा रखते है, परन्तु इष्ट की प्राप्ति के बिना अनिष्ट शमन की प्राप्ति नहीं हो सकती, यह वेदों का उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वेदों में यज्ञ द्वारा अनिष्ट का शमन कर इष्ट की प्राप्ति का मार्ग बतलाया गया है। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया हैं कि ''यज्ञों वै श्रेष्ठतमं कर्म''। यज्ञ सम्पादन के लिए शुभकाल की आवश्यकता होती है। क्योंकि शुभकाल में किया गया यज्ञ सफलता का द्योतक है। शुभकाल के बिना विहित यज्ञादि कर्म कष्टप्रद होते है। अपने जीवन यात्रा में मनुष्य बहुत से कार्यों का सम्पादन करता है, किन्तु शुभाशुभ कालविचार के बिना उसका निवर्हन नहीं हो पाता। धर्मकार्य, गृहनिर्माण, विवाह, यात्रा, युद्ध इत्यादि सभी कार्यों में शुभ समय की आवश्यकता होती है। इन समयों का ज्ञान केवल ज्योतिषशास्त्र के द्वारा ही प्राप्त होता है। ज्योतिषशास्त्र में ग्रहों एवं नक्षत्रों की गति, स्थिति, संस्थान, मान, प्रमाण एवं सर्वविध प्रभाव के विषय में सिद्धान्त, संहिता एवं होरा इन तीनों भेदों का वर्गीकरण किया गया है। अतः ज्योतिष शास्त्र को कालविधायक तथा काल बोधक शास्त्र कहा गया है। काल के दो भेद है – 1. नित्य 2. अनित्य।

नित्यकाल सविरंचि सब्रह्माण्ड एवं सर्व भूतसंहारक है। अनित्य काल कलनात्मक एवं व्यवहार योग्य है। इसी अनित्य व्यावहारिक काल के ज्ञान के लिए ज्योतिर्विद पंचांग

का निर्माण करते है। वस्तुत': ज्योतिष का मुख्य कार्य पंचांग का सम्यक रूप से निर्माण करना है। यज्ञादि श्रौत स्मार्त कर्मों के सम्पादन में, षोडशसंस्कारों के विधान में व्रत, पर्व, अनुष्ठान निर्णय में पंचांग का कालविधान आधार रूप से सहायक होता है। क्योंकि सूक्ष्म पंचांग द्वारा ही शुभाशुभ काल का ठीक–ठीक निर्णय होता है। अतः पंचांग का दूसरा नाम कालदर्शक भी है। महर्षि नारद ने कहा भी है – ''विनैतदखिलं श्रौतं स्मार्त्तं कर्मं न सिद्धयति'' यह उक्ति पंचांग पक्ष में सम्यक् रूप से घटता है।

पंचांग का महत्व प्राचीनकाल से ही स्वीकृत है। वाजसनेयसंहिता में लिखा है – प्रज्ञानाय नक्षत्र दर्शनम्। 'यादसे गणकम' इत्यादि वाक्यों से ज्योतिर्विदों का महत्त्व का प्रतिपादन होता है। वह ज्योतिर्विद निश्चय ही पंचांग का ज्ञान मौखिक रूप से या भोजपत्र या तालपत्र पर नक्षत्रों, ग्रहों को देखकर तथा आकाशीय स्थिति को देखकर धारण करता होगा। कहा गया कि ऋषियों द्वारा कथित शुभकाल में कोई भी किया गया कार्य सफल होता है। अतः प्राचीनकाल में भी पंचांग का ज्ञान एवं महत्त्व सभी लोग अवश्य जानते रहे होंगे। वराहमिहिर ने बृहत्संहिता में सांवत्सरसूत्राध्याय में दैव की योग्यता बतायी है, जिससे स्थिति स्पष्ट हो जाती है। वेध नैपुण्य के साथ विभिन्न मान–प्रमाणों के सत्यासत्य परीक्षण का सामर्थ्य भी दैवज्ञ में होना चाहिए। कालगणनादि के साथ साथ समस्त प्रभाव शस्त्र भी इससे जुड़े हैं।

धर्मशास्त्र से पंचांग का सम्बन्ध अभिन्न है। जैसे – यज्ञ, उत्सव, पर्व, व्रत का सम्यक रूप से निर्धारण पंचांग की सहायता के बिना कैसे सम्भव हो सकता है? पंचांग के सहायता से ही रामनवमी, जन्माष्टमी, रक्षाबन्धन, विजयादशमी, दीपावली, होली, शिवरात्रि, मकर संक्रान्ति इत्यादि समस्त व्रत, पर्व एवं समस्त उत्सव का सम्यक निर्धारण होता है। आकाशीय आश्चर्यजनक घटनाओं में ग्रहण उल्कापात, अन्तरिक्षोत्पात इत्यादि प्रमुख है। हमारे धार्मिक समाज में ग्रहण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ग्रहणकाल में स्नान, जप, दान का महत्त्व धर्मशास्त्रों में देखा जाता है। अतः भास्कराचार्य जी ने स्वग्रन्थ सिद्धान्तशिरोमणि में कहा है कि –

बहुफलं जपदानहुतादिकं स्मृति पुराणविदः प्रवदन्ति हि।
सदुपयोगि जने स चमत्कृति ग्रहणमिन्द्विनयोः कथयाम्यतः।।

इसी सन्दर्भ में आचार्य कमलाकर भट्ट ने भी कहा है कि –

यत्र स्नानाज्जपाद्होमाद्दानश्चेश्वरभक्तितः।
भूमिस्थितो नरः शीघ्रं सर्वपापैः प्रमुच्यते।।

उपर्युक्त श्लोकों द्वारा ग्रहणकाल का सम्यक् निर्धारण पंचांग द्वारा ही सम्भव है। संक्रान्ति, महावरूणी पर्व, पितरों का श्राद्ध तिथि, नवरात्रि में घटस्थापन मुहूर्त्त, यात्रा, वास्तु, गृहप्रवेश, राज्याभिषेक, अग्न्याधान, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, चौलकर्म, उपनयन, विद्यारम्भ, समावर्तन, विवाहादि सभी प्रकार के संस्कार मुहूर्त्त का ठीक–ठीक ज्ञान इसके अभाव में सम्भव नहीं है। सभी प्रकार के मुहूर्त्त का विचार पंचांग के द्वारा ही सम्पादित होते है। न केवल जीवित मनुष्यों का संस्कार अपितु मृत्युपश्चात् तिथियों से ही अनेक पितृकार्य होते हैं। सामान्य मनुष्यों के लिए भी दैनिक उपयोगी मुहूर्त्त जैसे – नूतन वस्त्र धारण, सुवर्ण प्रवालादि, रत्न आभूषण धारण, शस्त्रधारण, नृपर्शन, पशुक्रय, विक्रय, औषधि सेवन, पंचांग के अभाव में ठीक–ठीक जानना सम्भव नहीं है। हमारे कृषि प्रधान देश में किसानों के लिए बीजवपन, लतापादपारोपण, धान्यच्छेदन, कर्णमर्दन, सस्यरोपणादि समस्त कृषि कार्यों एवं ऋतुचक्र का ज्ञान, वृष्टिकाल ज्ञान आदि समस्त कार्यों में सफलता प्राप्ति के लिए शुभकाल का ज्ञान की आवश्यकता पंचांग द्वारा ही पूर्ण होता है। भारतवर्ष में कृषिकर्म

वृष्टि पर ही आधारित है। यदि वृष्टि का सम्यक् पूर्वानुमान होता है, तो कृषकों के लिए महत्त्वपूर्ण उपकार होता है। प्राचीनकाल में वर्षा का पूर्वानुमान तिथि नक्षत्र वार, ग्रहस्थिति, सूर्यसंचार, नक्षत्राभिप्रायिक ग्रहसंचार आदि के द्वारा और वायु संचार तथा अष्टविध निमित्तों के परीक्षण से दैवज्ञ करते थे। यद्यपि आधुनिक यन्त्र प्रधान युग में आकाश में छोड़े गये कृत्रिम उपग्रहों के द्वारा वैज्ञानिक वर्षा का पूर्वानुमान करते है, फिर भी इनकी भूमिका खत्म नहीं हुई, सामाजिक कार्यों में जलाशय खनन, कुआँ, भवन निर्माण, स्थापत्य आदि में शुभकाल का निर्धारण पंचांग से ही होता है। इन प्रमाणों द्वारा निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि मनुष्य जीवन से प्रारम्भ होकर मृत्यु पर्यन्त जो भी संस्कार व्रत, पर्व, उत्सव आदि जो धर्म आचरण है वे सभी मुहूर्त्त पर ही आधारित है। दिग्देशकाल ज्ञान एवं इनकी सापेक्षता से पात्र का निर्धारण भूगोलीय अक्षांशदेशान्तरादि ज्ञान, दिग्ज्ञान, भूपृष्ठीय वातावरणादि समस्त तथ्य ज्योतिष शास्त्र की निष्पत्ति से पंचांग में भी प्रयुक्त होते हैं।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि पंचांग में मानव जीवन से जुड़े प्रत्येक व्रत, पर्व, उत्सव, संस्कार आदि का वर्णन द्रष्टव्य है। मानव जीवन के गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त समस्त क्रियाकलापों का भारतीय वैदिक सनातन परम्परा के अनुरूप पंचांग में वर्णन प्राप्त होता है। न कि केवल व्रत, पर्व, उत्सव और संस्कार ही बल्कि आकाशीय ग्रह–नक्षत्रादि की स्थितियों का भी गणितीय उल्लेख प्राप्त होता है। यदि एक वाक्य में कहना चाहें तो ज्योतिषशास्त्र के समस्त विषयों का सारतत्व कहीं एक स्थान पर मिलता हैं, तो वह है पंचांग। वस्तुतः पंचांग में केवल पाँच अंग ही नहीं अपितु सिद्धान्त ज्योतिष के अन्तर्गत प्रमुख रूप से ग्रहस्पष्टीकरण, ग्रहों की स्थिति, ग्रहण, ग्रहोदयास्त, कालांश, दिनमान, तिथिमान, नक्षत्रमान, योग एवं करण मान, भ्रदादि विचार, ग्रहराशिसंचार, रेलवे अन्तर, अक्षांश, देशान्तर, चरान्तर, बेलान्तर, क्रान्तिमान, दैनिकलग्नसारिणी आदि का उल्लेख सम्यक् रूप से मिलता है।

फलित ज्योतिष के अन्तर्गत प्रमुख रूप से व्रतोत्सव, पर्व, प्रमुख तिथियाँ, मुहूर्त्त, विवाह, मेलापक, धर्मकार्य, श्राद्धादि निर्णय, नूतन कार्यादि का विचार मिलता है।

संहिता ज्योतिष के अन्तर्गत सुभिक्ष–दुर्भिक्ष, समर्घ–महर्घ, फसल, दकार्गल, वास्तु, भौमान्तरिक्ष, उत्पात, प्राकृतिक आपदादि से सम्बन्धित समग्र तथ्यों का उल्लेख मिलता है।

भारतीयज्योतिषशास्त्र का मूलाधार आकाशीय ग्रहनक्षत्रों का गणित तथा वेध है। गणित के आधार पर सूर्य चन्द्रादि की स्थितियों का सही निर्णय कर गोलीयवेध से दृग्गणितैक्यजन्य समन्वय के द्वारा ग्रहों की वास्तविक दृष्टयुपलब्ध स्थिति ही, उनकी व्यावहारिक उपयोगिता का मूलाधार है। पर्व, धर्मकार्य, यात्रा, विवाह, उत्सवजातक तथा भविष्यफल की जानकारी हेतु ग्रहगणित की शुद्धता की परख पंचांगनिर्माण के द्वारा ही सिद्ध होता है। पंचांग के पाँचों अंग व्यक्त काल के प्रधानतत्व है। इनके ही आधार पर प्रत्येक धार्मिक, सामाजिक, व्यावहारिक एवं शास्त्रीयकार्य सम्पन्न होते हैं। भारतीयसिद्धान्तज्योतिष की अपनी विशेषता भी है।

जिस शास्त्र के अन्तर्गत ग्रहनक्षत्रों के गणित गोलीयप्रभाव एवं उनकी विशेषताओं का सांगोपांग वर्णन हो, वह ज्योतिषशास्त्र कहलाता है। विभिन्न राशियों नक्षत्रों में सूर्यचन्द्र आदि के परिभ्रमण से 'काल' की गणना तथा पर्यवेक्षण से इसका ज्ञान होता है। सृष्टिकल्प के प्रारम्भ में सभी ग्रह राशिवृत्त के आदि बिन्दु पर थे। अपनी–अपनी कक्षाओं में कक्षाओं के लघु एवं वृहदाकार भेद के कारण बिम्ब के व्यास के लघु तथा बृहद् दृश्य होने से तीव्र मन्द एवं मध्यम प्रतीत होने वाली गतियों का अध्ययन करने वाले ज्योतिषी तथा उनकी सैद्धान्तिक गणना करने वाले गणक कहलाए। इन

गोलीयबिम्बों का अध्ययन के विविध भेद ही ज्योतिषनाम से प्रसिद्ध हुआ तथा इनके वार्षिक गणितीय विवरण 'पंचांग' नाम से प्रसिद्ध हुआ।

अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड नायक श्री सर्वेश्वर के सृष्टयुत्पादन पालन संवरण की सतत् संचरण परिवर्तन परिवर्द्धमान परम्परा में स्थावर जंगमादि ही नहीं वरन् प्रत्येक प्राणीमात्र भी इस काल की गतिशीलता से प्रभावित है। 'कालस्तु कलनात्मकः' अर्थात् गणनात्मक काल की गणना अनादि काल से ज्योतिष के माध्यम से की जा रही है।

वेद के षडंगों में ज्योतिषशास्त्र का अद्वितीय स्थान है। पाणिनि ने अपने शिक्षा ग्रन्थ में इसे वेद का नेत्र कहा है – ज्योतिषामयनं चक्षुः। वेदों में सूर्य चन्द्रमा तथा अन्य नक्षत्रों की देवस्वरूप में स्तुतिपरक ऋचायें प्राप्त होती है। ब्राह्मण और आरण्यक ग्रन्थों में ग्रह–नक्षत्रों के गुणस्वरूप प्रभावादि के रहस्योद्घाटनात्मक चिन्तन किया गया है।

ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान की यह अजस्र धारा ब्रह्मादि परमाचार्यों से लेकर पराशर महर्षि तक अष्टादश महामुनियों का गम्भीर चिन्तन प्रवाहित होती रही है। अष्टादशैते गम्भीरा जयोतिः शास्त्र प्रवर्त्तकाः।।

इन आचार्यों के परवर्ती ऋषिकल्प शास्त्र सागर के पारंगत विशिष्ट विद्वानों ने अपने–अपने ग्रन्थों यथा– वराहमिहिराचार्य ने ईसा से 148 वर्ष पूर्व पंचसिद्धान्तिका, बृहत्संहिता, बृहज्जातक, श्रीपति ने जातकपद्धति, वल्लालसेन ने अद्भुतसागर, नारायण दैवज्ञ ने मुहूर्त्तमार्तण्ड, गणपति ने मुहूर्तगणपति, भर्तृहरि ने राजमार्तण्ड में संहितोक्त विषयों का दिग्देशकालानुसार जन समूह के कल्याणार्थ सरल पद्धति में प्रस्तुत किया है।

ज्योतिष शास्त्र को जानने के लिए मुख्यतः इसके दो भाग किए गए – गणित और फलित। पश्चात् यह स्कन्धत्रय के नामों से विभाजित होकर जाना जाने लगा। सिद्धान्त, संहिता और होरा इन तीन नामों से ज्ञात होने के कारण इसे स्कन्धत्रय भी कहते हैं। सम्प्रति उक्त विभाजन ने पंचांत्मक (होरा, गणित, संहिता, प्रश्न और निमित्त) रूप को धारण कर लिया है।

ज्योतिष शास्त्र के समस्त सैद्धान्तिक ग्रन्थों का अध्ययन हो जाने पर भी प्रायोगिक स्थल में जिसके बिना एक ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता भी अभाव का अनुभव करता है वह है – पंचांग। वस्तुतः पंचांग को यदि हम आधुनिक भाषा में कहे तो वह एक ज्योतिषी का कम्प्यूटर है।

इस प्रकार देखा जाये तो पंचांग की उपयोगिता मानव जीवन में सर्वतोभावेन दिखलाई पड़ती है। मानव को उसके जीवन से जुड़े पग–पग पर पंचांग उसके लिए वरदान साबित हो सकती है। आवश्यकता इस बात की है, सामान्य मनुष्य को भी इसकी जानकारी होनी चाहिए, जिससे वह इसके महत्त्व को समझते हुए उसका जीवन में उपयोग कर सके।

सार रूप में निम्नलिखित ज्ञानान्तर्गत पंचांग की उपयोगिता व महत्व को समझा जा सकता है –

1. तिथि–वार–नक्षत्र–योग–करण ज्ञान में
2. पक्ष–मास–ऋतु–अयन एवं गोल ज्ञान में
3. शक–संवत्सरादि ज्ञान में
4. प्रतिदिवसीय लग्न निर्धारण में
5. ग्रहगणित बोध में

6. ग्रहण बोध में
7. विभिन्न शुभाशुभ मुहूर्त्तों के ज्ञान में
8. दैनन्दिन ग्रहों की स्थिति ज्ञान में
9. वास्तु सम्बन्धित गृहारम्भ, गृहप्रवेशादि ज्ञान में
10. प्राकृतिक एवं अन्तरिक्ष सम्बन्धित रहस्यों की जानकारी में
11. वैश्विक स्थिति के ज्ञान में
12. मानव के दैनन्दिन जीवन से जुड़े अनेक क्रियाकलापों में
13. जन्मकुण्डली निर्माण तथा फलादेशादि कार्य में
14. व्रत–पर्व निर्धारण में
15. मूल रूप से समग्र ज्योतिष शास्त्र (सिद्धान्त, संहिता, होरा, प्रश्न, शकुन आदि) के सारतत्व ज्ञान बोध में।

उपर्युक्त सभी विधाओं में पंचांग की उपयोगिता परिलक्षित होती है। पंचांग मूलतः मानव–मात्र के जीवन से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा है। अतः मनुष्य पंचांग का ज्ञान प्राप्त कर जीवन को भी उपयोगी बना सकता है।

5.4 तिथि एवं वारों में कृत्याकृत्य विचार

ज्योतिषशास्त्र एक प्रायोगिक विद्या है। इसका प्रयोगजन्य अनुभव ही इसे विज्ञान की कसौटी पर खरा उतारता है और समस्त विज्ञान का मूल सिद्ध करता है। अतः जब तक आप सभी को पंचांग के अंगभूत तिथि एवं वारों में कृत्याकृत्य (क्या करें क्या ना करें) का ज्ञान नहीं हो जायेगा तब तक आप कैसे समझेंगे कि पंचांग का महत्त्व एवं उपयोगिता मानव जीवन में किस प्रकार से है। इसलिए आइये हम सभी अब तिथि एवं वारों में कृत्याकृत्य का ज्ञान प्राप्त करते हैं –

प्रतिपदा (पहली) तिथि में करणीय कृत्य – कृष्णपक्ष की प्रतिपदा में विवाह, यात्रा, देवप्रतिष्ठा, यज्ञोपवीत, मुण्डन, अखण्ड रामचरितमानसादि पाठ, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, शान्तिकर्म, पौष्टिक कर्मों एवं धार्मिक कृत्यों के लिए शुभ होती है।

अकरणीय कृत्य – प्रतिपदा को कूष्माण्ड (कुम्हड़ा या पेठा) नहीं खाना चाहिये। विश्व के प्रमुख काल दर्शक, द्वितीय प्रकरण मार्षि अशय कत्यायन।

आपको पूर्व के इकाईयों में यह ज्ञात हो चुका है कि तिथियों की नन्दादि संज्ञायें कही गयी हैं। यहॉ उन तिथियों में कृत्याकृत्य का विचार करेंगे। बृठदवकरुडा चक्रम् तिथिप्रकरण (पी.सीताराम झा)

नन्दादि (प्रतिपदा, एकादशी एवं षष्ठी) एवं भद्रा (द्वितीया, सप्तमी एवं द्वादशी) तिथियों में करणीय –

नन्दासु चित्रोत्सववास्तुतंत्र क्षेत्रादि कुर्वीत तथैव नृत्यम्।
विवाह भूपाशाकटाध्वयाने भद्रासु चैतान्यपि पौषिटकानि।। श्लोक–8

नन्दा (1,6,11) तिथियों में चित्रकर्म, उत्सव, वास्तु, तन्त्र–मन्त्र, खेती, नाच–तमाशा, विवाह, गाड़ी आदि वाहनों पर चढ़ना शुभ है और भद्रा तिथियों में उक्त कार्य शुभ माना गया है। इसके साथ–साथ पौष्टिक कर्म भी नन्दा तिथियों मे करणीय है।

जया (3,8,13) एवं रिक्ता (4,9,14) तिथियों में करणीय –

जयासु संग्रामबलोपयोगिकार्याणि सिद्धयन्ति विनिर्मितानि।
रिक्तासु तद्वद्वधबन्धनादिविषाग्नि शस्त्राणि च यांति सिद्धिम्।। श्लोक–9

बृठदवकरुडा चक्रम् तिथिप्रकरण (पी.सीताराम झा)

जया तिथियों में संग्राम में उपयोगी कार्य सब सिद्ध होते है। इसके साथ–साथ रिक्ता में वध–बन्धनादि विष–अग्नि सम्बन्धी शस्त्र बनाये हुए शुभ होते हैं।

पूर्णा तिथियों (5,10,15) मे ंकरणीय –

पूर्णासु मांगल्य विवाहयात्रासपौष्टिकं शान्तिककर्म कार्यम्।
सदैव दर्शे पितृकर्म मुक्त्वा नान्यद्विदध्याच्छुभमंगलानि।। श्लोक–10
बृठदवकरुडा चक्रम् तिथिप्रकरण (पी.सीताराम झा)

अर्थात पूर्णा तिथियों में मांगलिक, विवाह, यात्रा तथा पौष्टिक सहित शान्ति कर्म करें। परन्तु अमावस्या में केवल पितृकर्मों को छोड़कर और कोई कार्य नहीं करना चाहिये।

द्वितीया तिथि के करणीय कृत्य –

द्वितीया तिथि में राजनीति सम्बन्धी कार्य, चुनाव का पर्चा दाखिल करना, प्रशासनिक कार्य, वास्तु, यात्रा तथा प्रतिष्ठादि का आरम्भ शुभ होता है। विश्व के प्रमुख काल दर्शक, द्वितीय प्रकरण मार्षि अशय कत्यायन।

अकरणीय कृत्य – इस तिथि में नींबू नहीं खाना चाहिये। विश्व के प्रमुख काल दर्शक, द्वितीय प्रकरण मार्षि अशय कत्यायन।

तृतीया तिथि के करणीय कृत्य – तृतीया तिथि में संगीत–विद्याखिल–शिल्पकर्म–सीमन्त–मुण्डन–अन्नप्राशन–गृहप्रवेश–फौजदारी तथा दीवानी के मुकदमें दायर करना आदि ये सभी कार्य तथा जो कार्य द्वितीया में विहित है उनका करना शुभ होता है। तृतीया तिथि यदि बुधवार को पड़े तो मृत्युदा होती है किन्तु मंगलवार को यदि तृतीया तिथि हो तो वह सिद्धि देने वाली होती है। यह ध्यान रखना चाहिए।

अकरणीय कृत्य – इस तिथि में नमक, परवल तथा शाक नहीं खाना चाहिये। विश्व के प्रमुख काल दर्शक, द्वितीय प्रकरण मार्षि अशय कत्यायन।

चतुर्थी तिथि में करणीय कृत्य – यह रिक्ता संज्ञक तिथि है, जिसे सामान्यतया शुभकर्मों के लिए फलहीन बतलाया गया है। अतः इस तिथि में दुष्टता के कार्य सिद्ध होते हैं।

अकरणीय कृत्य – इस तिथि में मूली तथा बैगन का खाना धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण से वर्जित कहा गया है।

पंचमी तिथि में करणीय कृत्य – पंचमी तिथि में ऋण–ग्रहण छोड़कर सम्पूर्ण शुभ कृत्य करना चाहिये। इस तिथि में चर तथा स्थिर दोनों प्रकार के कार्य सिद्ध होते हैं। कल–कारखाने, मशीनरी, यात्रा– इस प्रकार के कार्य चरकार्य होते हैं तथा कृषि, कूपारम्भ, बाग–बगीजा लगाना, मकान बनाना आदि स्थिर कार्य होते हैं। यथा –

शुभकर्माणि सर्वाणि स्थिराणि चराणि च।
ऋणादानं विनायान्ति सुसिद्धिं पंचमी दिने।।

विशेष – पौष मास के दोनों पक्षों में यह तिथि शून्य फल देती है। शनिवार के दिन पंचमी पड़ने पर मृत्युदा होती है, अतः इसकी शुभता में कमी आ जाती है, परन्तु गुरूवार के दिन यदि पंचमी तिथि हो तो विशेष शुभ फल देने वाली होती है।

अकरणीय कृत्य – पंचमी तिथि में कटहल, बेल तथा खटाई नहीं खानी चाहिये। विश्व के प्रमुख काल दर्शक, द्वितीय प्रकरण महर्षि अशय को त्यायन)

षष्ठी तिथि में करणीय कृत्य – शष्ठी तिथि में वस्त्रधारण, अलंकारधारण, उपाधि धारण, अलंकरण धारण, आभूषण, वेशभूषा धारण, वास्तुकर्म (मकान बनाने से सम्बन्धित कार्य), विविध शिल्पकार्य, शान्तिक–पौष्टिक कार्य एवं मांगलिक कार्य शुभ होते है।

अकरणीय कृत्य – इस तिथि में तेल की मालिश, श्राद्ध, वनस्पति की दातुन नहीं करनी चाहिये। इसी प्रकार तेल में पका भोजन एवं नीम तथा कमरख का सेवन भी वर्जित है इस तिथि में।

विशेष – षष्ठी तिथि रविवार एवं मंगलवार को पड़े तो अशुभ होती है किन्तु शुक्रवार को यदि षष्ठी पड़े तो सिद्धिदायक होती है। माघ कृष्णपक्ष में यह तिथि शून्य होती है।

सप्तमी तिथि में करणीय कृत्य – सप्तमी तिथि में हाथी, घोड़े, मोटरसाइकल, कार आदि की सवारी, विवाहादि शुभ कर्म, संगीतकार्य, वस्त्राभूषण–धारण, गृहप्रवेश, दुकान का प्रारम्भ, व्यापार, वाणिज्य, वकालत, युद्ध तथा मुकदमा प्रारम्भ करना आदि कार्य शुभ होते हैं। चुनाव का पर्चा दाखिल करने के लिए तथा चुनाव–प्रचार आरम्भ करने के लिए यह तिथि शुभ होती है। यथा –

गजकृत्यं विवाहादि संगीतं वस्त्रभूषणम्।
यात्राप्रवेशसंग्रामसिद्धेयुः सप्तमीतिथौ।।

शुक्ल पक्ष की सप्तमी में शिववास शुभ, परन्तु कृष्ण सप्तमी में अशुभ होता है।

अकरणीय कृत्य – सप्तमी तिथि में तेल का स्पर्श, नीले कपड़े का पहनना, ताम्बे के पात्र में भोजन करना तथा ऑवला से स्नान करना वर्जित है –

सप्तम्यां न स्पृशेत्तैलं नीलवस्त्रं न धारयेत्।
न चाप्यामलकैः स्नानं न कुर्यात्कलहं नरः।।
सप्तम्यां नैव कुर्वीत ताम्रपात्रेण भोजनम्।।

अष्टमी तिथि में करणीय कृत्य – अष्टमी तिथि में अनेक प्रकार की विद्यायें–कलायें सीखना, उनका प्रदर्शन–प्रचार आदि करना, ग्रन्थ लेखन, कविता–कहानी–नाटक आदि का लेखन वाचन–प्रकाशन, किसी ग्रन्थ का विमोचन आदि कार्य विहित होते हैं। अभिनय या ललित कलाओं में शिक्षण देने वाली संस्थाओं में प्रवेश लेना एवं आभूषण–वेशभूषादि निर्माण के कार्य इस तिथि में शुभ होते हैं। इसके साथ–साथ मनोरंजन सम्बन्धी व्यवसायों का आरम्भ, संगीत उपकरण, खेलकूद का सामान, रेडियो, टेलीविजन, विडियो आदि इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, दूरभाष, दूरलेख, कम्प्यूटर सम्बन्धी कार्य, सॉफ्टवेयर निर्माण, वायरलेस कार्य एवं कूरियर जैसी सेवाओं का आरम्भ भी इसमें प्रशस्त है। व्यूटी पार्लर, नर्सिंग होम, मनोवैज्ञानिक सलाह केन्द्र आदि खोलने के लिए भी यह तिथि उपयुक्त कहा गया है। यथा –

संग्रामयोग्याखिलवास्तुकर्म नृत्यप्रमोदाखिललेखनानि।
स्त्रीरत्नकार्याखिलभूषणानि कार्याणि कार्याणि महेशतिथ्याम्।।

अकरणीय कृत्य – इस तिथि में मांसाहारी व्यक्तियों को मांस–सेवन नहीं करना चाहिये। इस तिथि में नारियल का भक्षण निषिद्ध कहा गया है।

कृष्णपक्ष की अष्टमी शिवार्चन में शुभ होती है, परन्तु शुक्ल पक्ष की अष्टमी में शिवार्चन निषिद्ध है। चैत्रमास में अष्टमी तिथि शून्य होती है।

नवमी तिथि में करणीय कृत्य – नवमी तिथि में पशुओं को बधिया करना, ऊँटों को नकेल डालना, बैल–भैंसों को नाथना, सांप पकड़ना और उनके विषदन्तों को उखाड़ना, घोड़ों को लगाम देना, राष्ट्र के शत्रुओं एवं आतंकवादियों को कठोर दण्ड देना आदि कार्य विहित हैं। विशेष शुभ कार्य इस तिथि में करने के लिए वर्जित है। यह तिथि शनिवार को सिद्धि देने वाली होती है तथा गुरूवार को मृत्युदा होती है। चैत्रमास में यह शून्य संज्ञक होती है।

अकरणीय कृत्य – इस तिथि में लौकी तथा कद्दू नहीं खाना चाहिये। शिवपूजन के लिए यह तिथि शुक्ल पक्ष में अशुभ, परन्तु कृष्णपक्ष में शुभ होती है।

दशमी तिथि में करणीय कृत्य – दशमी तिथि को नया वाहन खरीदना, वाहन चलाना सीखना, कर्मचारियों, अधिकारियों तथा मन्त्रियों का पद ग्रहण करना, शपथ ग्रहण करना, शिलान्यास, उद्घाटन, नवीन ग्रन्थ का विमोचन, भूमिपूजन, पत्र–पत्रिका या दैनिक कार्य का शुभारम्भ, स्मारिका प्रकाशन, अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन, पुराने इंजिनों का बोर कराना आदि कार्य प्रशस्त कहा गया है। आश्विन मास में शून्य संज्ञक होने से यह शुभ कर्मो में वर्जित रहती है। शनिवार को पड़ने वाली दशमी मृत्युदा तथा गुरूवार को पड़नेवाली सिद्धि देने वाली होती है।

अकरणीय कृत्य – दशमी को परवल तथा शाक नहीं खाना चाहिये। दशमी तिथि में किसी भी पक्ष में शिव जी का वास अनुकूल न होने के कारण इसमें शिवार्चन भी वर्जित होता है।

विशेष – भविष्यपुराण के अनुसार दशमी तिथि को यमराज (काल) की पूजा करने से आरोग्य तथा दीर्घायु की प्राप्ति होती है। इस तिथि को वाणिज्य, व्यापार, बैंक में खाता खोलना, बॉण्ड खरीदना, बीमा कराना तथा नौकरी आरम्भ करना विशेष शुभ होता है।

एकादशी तिथि में करणीय कृत्य – एकादशी को धर्मकार्य, पुराणकथा –प्रवचन, कीर्तन, भजन, अखण्डपाठ आदि का प्रारम्भ करना शुभ होता है। धर्मार्थ औषधालय, अन्नक्षेत्र, प्याऊ, देवप्रतिष्ठा, देवालय निर्माण का प्रारम्भ, प्रासाद–प्रतिष्ठा, कूपारम्भ, कूप–प्रतिष्ठा, जलाशयारम्भ, जलाशय की प्रतिष्ठा, निःशुल्क पाठशाला का शुभारम्भ, यज्ञकार्य, सार्वजनिक निर्माण के कार्यों का लोकार्पण आदि कार्य इस तिथि में करणीय होता है। रविवार एवं मंगलवार को पड़नेवाली एकादशी तिथि अशुभ तथा शुक्रवार को पड़ने पर सिद्धि देने वाली होती है।

अकरणीय कृत्य – एकादशी को चावल तथा दलिया नहीं खाना चाहिये।

विशेष – एकादशी को भविष्य पुराण के अनुसार विश्वदेव की पूजा करने से धन–धान्य, सन्तति, वाहन, पशु तथा आवास आदि की प्राप्ति होती है। यथा –

एकादश्यां यथोद्दिष्टा विश्वेदेवाः प्रपूजिताः।
प्रजां पशुं धनं धान्यं प्रयच्छन्ति महीं तथा।।

द्वादशी तिथि में करणीय कृत्य – द्वादशी तिथि में सभी प्रकार के चर एवं स्थिर कार्य, यात्रा, यज्ञोपवीत, विवाह, दुकान, मकानसम्बन्धी कार्य शुभ होते हैं। यह सोमवार तथा शुक्रवार को अशुभ तथा बुधवार को सिद्धि देने वाली होती है। दोनों पक्षों की

द्वादशी तिथि में शिव का वास शुभ स्थिति में होने से इस तिथि में शिवार्चन शुभ होता है।

अकरणीय कृत्य– द्वादशी को तेल की मालिश तथा तेल से बने पदार्थो एवं मसूर दाल का भक्षण नहीं करना चाहिये।

त्रयोदशी तिथि में करणीय कृत्य – शुक्लपक्ष की त्रयोदशी शिवार्चन हेतु शुभ माना गया है। इस तिथि में समस्त शुभ कार्य करने के लिए कहा गया है। केवल कृष्णपक्ष की त्रयोदशी को छोड़कर। यह तिथि बुधवार को अशुभ तथा मंगलवार को सिद्धि देने वाली होती है। दोनों पक्षों की त्रयोदशी को निरन्तरता के साथ कामदेव की पूजा करते रहने से अविवाहितों का विवाह हो जाता है तथा स्वयं रूपवान् एवं तेजस्वी होता है। **भविष्य पुराण के अनुसार** –

कामदेवं त्रयोदश्यां सुरूपो जायते ध्रुवम्।
इष्टां रूपवतीं भार्यां लभेत्कामांश्च पुष्कलान्।।

गर्ग संहिता के अनुसार –

जया त्रयोदशीमाह कर्तव्यं कर्म शोभनम्।
वस्त्रमाल्यमलंकारविप्राण्याभरणानि च।।
सौभाग्यकरणं स्त्रीणों कन्यावरणमेव च।
मुण्डनं युग्मवसनं कामं विन्द्याच्च देवताम्।।

चतुर्दशी तिथि में करणीय कृत्य – यह तिथि रिक्ता संज्ञक (फलहीन) होने से दोनों पक्षों की चतुर्दशी समस्त शुभ कर्मों में त्याज्य है। अतः इसमें केवल दुष्टता के कर्म ही सफल होते हैं। इसीलिये यह क्रूरा संज्ञक है।

अकरणीय कृत्य – चतुर्दशी तिथि में मधु नहीं खाना चाहिये, मुण्डन नहीं करवाना चाहिये। तीर्थस्थान में चतुर्दशी को मुण्डन कराया जा सकता है। जैसा कि महर्षि गर्ग का मत है –

उग्रां चतुर्दशीं विन्द्याद्दारूणान्यत्र कारयेत्।
बन्धनं रोधनं चैव पातनं च विशेषतः।।

पूर्णिमा तिथि में करणीय कृत्य –

यज्ञक्रियापौष्टिकमंगलानि संग्रामयोग्याखिलवास्तुकर्म।
उद्वाहशिल्पाखिलभूषणाद्यं कार्यं प्रतिष्ठा खलु पौर्णमास्याम्।।

अर्थात् पूर्णिमा में यज्ञकार्य, पौष्टिक एवं मांगलिक कृत्य, संग्राम, दीक्षान्त समारोह, सम्पूर्ण वास्तुसम्बन्धित कार्य, विवाह, शिल्पकर्म, आभूषणादि, देव–प्रतिष्ठादि कर्म विहित हैं। इस तिथि को धर्मकार्यों में मन लगाना चाहिये तथा पवित्र ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिये।

अकरणीय कृत्य – पूर्णिमा में जूआ, सट्टा, लाटरी आदि कर्मों से बचना चाहिये। मानसिक उत्तेजना से बचना चाहिये। पूर्णिमा चन्द्रबली होता है और चन्द्रमा मन का कारक है, अतः इस दिन मन विशेष उत्साहित रहता है। इसलिए यदि व्यक्ति के मन में इस दिन बुरे विचारों का प्रवाह हुआ तो उसके द्वारा अवश्य ही कोई अनर्थ होगा। अतः पूर्णिमा को बुरे विचारों से बचना चाहिये।

अमावस्या तिथि में करणीय कृत्य – अमावस्या तिथि को पितरों का श्राद्धकर्म करना चाहिये। इस तिथि में बैलों को पूरे दिन चरने के लिये छोड़ देना चाहिये।

अकरणीय कृत्य – अमावस्या में वनस्पतियों में सोम का वास होने से उस दिन बैलों को हल में जोतने का पूर्णतः निषेध किया गया है।

विशेष – यदि अमावस्या में किसी बालक या बालिका का जन्म हो तो उसकी शान्ति मूल नक्षत्रों में जन्मे बालकों की भॉति करानी चाहिये। अमावस्या में किसी बालक का जन्म उस परिवार में पितृदोष की सूचना देता है।

तिथियों में कृत्याकृत्य विचारोपरान्त अब यहॉ हम सभी वारों का अध्ययन करते हैं।

वारों में कृत्याकृत्य विचार

रविवार में कृत्य – रविवार के दिन राज्याभिषेक, शपथग्रहण, अन्य कर्मचारियों द्वारा कार्यभार ग्रहण, उत्सव मनाना, वाहन पर सवारी करना, वाहन चलाना सीखना, नया वाहन खरीदना, पशुओं का क्रय–विक्रय, ईंट चूना आदि के भट्ठे में अग्नि डालना, चूल्हा, स्टोव, ओवन आदि प्रारम्भ करना, टेलिफोन लगवाना, औषधि बनाना, औषधि सेवन करना, शस्त्रकर्म, ऑपरेशन, सोना तथा लोहा से सम्बन्धित कार्य, ताम्रकार आदि का काम प्रारम्भ करना व सीखना, आभूषणादि बनाना, ऊनी वस्त्रों का निर्माण आरम्भ करना, ऊनी वस्त्र पहनना, नया स्वेटर आदि बुनना प्रारम्भ करना, चमड़े का कार्य, जूता पहनना तथा कारपेन्टर आदि का काम शुभ होता है।

अकृत्य कर्म – रविवार को नमक नहीं खाना चाहिये, साबुन–तेल नहीं लगाना चाहिये। यथासम्भव तेल से बने पदार्थ नहीं खाना चाहिये।

सोमवार में कृत्य – सोमवार के दिन श्रृंगार, पुष्पसज्जा, कमलपुष्प–धारण, मोती–धारण, जल में उत्पन्न वस्तुओं का क्रय–विक्रय, चॉदी एवं उससे निर्मित आभूषणों का क्रय–विक्रय, श्वेत वस्त्र धारण, ईख एवं उससे बने पदार्थ का क्रय–विक्रय, गाना बजाना, नाचना, मनोरंजन, ऑडियो–विडियो आदि का व्यवहार एव क्रय–विक्रय, सींग वाले पशुओं का क्रय–विक्रय, अक्षराम्भ, विद्यारम्भ, यज्ञारम्भ, कृषि आदि कार्य करने चाहिये। आचार्य श्रीपति के अनुसार –

शंखाब्जमुक्तारजतं सुभोज्यं स्त्रीवृक्षकृष्यम्बुविभूषणाद्यम्।
गीतक्रतुक्षीरविकारश्रृंगी पुष्पाक्षराम्भणमिन्दुवारे।।

पेड़–पौधे, बाग–बगीचे से सम्बन्धित कार्य भी सोमवार को शुभ होते हैं।

अकृत्य – सोमवार को पूर्वदिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिये।

मंगलवार में कृत्य – मंगल देवताओं का सेनानायक है। अतः उसके स्वभाव के अनुसार ही कार्यो को ही मंगलवार को करना चाहिये। आचार्य श्रीपति के अनुसार –

भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रबन्धाऽभिघाताहवशाढयदम्भान्।
सेनानिवेशाकरधातुहेमप्रवालरत्नानि कुजेऽह्नि कुर्यात्।।

अर्थात् राष्ट्रहित में राष्ट्र–शत्रुओं के लिए भेदहित (फूट डालने वाली नीति) कर्म, अनृत (कूटनीति कार्य), स्तेय राष्ट्रहित में गुप्तचर सेवाओं के कर्मचारियों द्वारा स्तेय (चोरी) कार्य, विषाग्नि, बन्ध, अभिघात, आहव (युद्ध एवं शत्रु पर प्रत्यक्ष घोषित आक्रमण), शाठय, दम्भ, सेनानिवेश, आकर, धातु, हेम (सोने का निर्माण व विक्रय) आदि सम्बन्धित कार्य प्रशस्त हैं।

अकृत्य – मंगलवार को कभी भी ऋण व्यापार नहीं करना चाहिये।

बुधवार के कृत्य – बुधवार के दिन कला–कौशल, निपुणता के कार्य, पण्य (व्यापार), अध्ययन, सेवाकार्य, लिपि–लेखन, आभूषणों का निर्माण, तार या जरी गोटे का काम, दो राष्ट्रों के बीच राजनैतिक एवं आर्थिक समझौते, वाद–विवाद, मुकदमा आदि का प्रारम्भ, प्रतियोगिता का आयोजन, अन्त्याक्षरी का आयोजन, वकालत प्रारम्भ करना, दूत या राजदूत का कार्य प्रारम्भ करना शुभ होता है। जैसा कि आचार्य कथन है –

नैपुण्यपुण्याध्ययनं कलादिशिल्पादिसेवालिपिलेखकानि।
धातुक्रियाकांचनयुक्तिसन्धिः व्यायामवादांश्च बुधे विधेयाः।।

अकृत्य – बुधवार को उत्तर दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिये।

गुरूवार के कृत्य – गुरूवार को धार्मिक कार्य, पौष्टिक कार्य, यज्ञ, विद्याध्ययन, मांगलिक कार्य, हेमाम्बर, वेश्म (गृहनिर्माण, गृहप्रवेश, गृह से सम्बन्धित अन्य कार्य) तथा यात्रा (धार्मिक यात्रा, तीर्थाटन आदि) करना शुभ होता है। यथा –

धर्मक्रिया पौष्टिकयज्ञविद्या मांगल्यहेमाम्बरवेश्मयात्रा।
रथाश्वभैषज्यविभूषणाद्यं कार्यं विदध्यात्सुरमन्त्रिणेऽह्नि।।

अकृत्य – गुरूवार को दक्षिण दिशा की यात्रा वर्जित है।

शुक्रवार के कृत्य –

शुक्रवार के दिन विलासिता तथा मनोरंजन से सम्बन्धित कार्य, गायन–वादन, नर्तन, नये पलंग–सोफा–कुर्सियों का क्रय तथा उपयोग, इलेक्ट्रॉनिक सामग्रियों का उपयोग, वस्त्राभूषणों का खरीद उपयोग, पशुओं का व्यापार, साज–सज्जा का व्यापर, सौन्दर्य प्रसाधन का व्यापार खेती, बाग–बगीचा का कार्य तथा बैंकिग आदि का कार्य शुभ होता है। यथा –

स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्धवस्त्रोत्सवालंकरणादि कर्म।
भूपण्यगोकोशकृषिक्रियाश्च सिध्यन्ति शुक्रस्य दिने समस्ता।।

अकृत्य – शुक्रवार को पश्चिम दिशा की यात्रा वर्जित है।

शनिवार के कृत्य – शनिवार को सुस्त, आलसी, सोते रहनेवाला, ठण्डा एवं न्यायवादी ग्रह है। यह नौकर प्रवृत्ति वाला ग्रह है। अतः तत्सम्बन्धित कार्य ही इस दिन प्रशस्त कहे गये हैं –

लोहाश्मशीसत्रपुरस्रदाशपापानृतस्तेयविषं सवाद्यम्।
गृहप्रवेशो द्विपबन्धनदीक्षा स्थिरं च कर्मार्कसुतेऽह्नि कुर्यात्।।

अर्थात् लोहे से सम्बन्धित काम, शीशा से सम्बन्धित कार्य, त्रपु धातु से सम्बन्धित कार्य, लोहे के औजर, उपकरण तथा हथियारों का निर्माण, नल आदि की मरम्मत, बर्तनों पर कलई, असत्य सम्भाषण, अर्क तथा आसवों का निर्माण, मद्यनिर्माण, गृहप्रवेश, ट्रैक्टर आदि मन्दगामी वाहनों का व्यापार, फटे–पुराने एवं काले कपड़ों का धन्धा, ये सभी कार्य शनिवार को शुभ माना गया है। मजदूरी शुरू करना तथा मजदूरों को काम पर लगाना भी इस दिन शुभ होता है।

अकृत्य – शनिवार और ज्येष्ठा नक्षत्र को पूर्व दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए। तेल का क्रय भी वर्जित है।

इस प्रकार आप सभी ने तिथि एवं वारों में क्या करना चाहिए और क्या नहीं। इसका अध्ययन कर लिया। प्रायोगिक आधार पर आप इसे जीवन में उतारकर पंचांग की उपयोगिता को समझ सकते हैं।

5.4.1 नक्षत्र, योग एवं करणों में कृत्याकृत्य विचार

आप सभी पूर्व की इकाईयों में 27 नक्षत्रों से परिचित हो चुके हैं। अब आप उसकी विभिन्न संज्ञाओं के साथ–साथ उसमें कृत्याकृत्य का अध्ययन करने जा रहे हैं।

ध्रुव नक्षत्र और उसमें किए जाने वाले कर्म –

उत्त्रात्रयरोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम्।
तत्र स्थिरं बीजगेहशांत्यारामादिसिद्धये।।

अर्थात् तीनों उत्तरा, रोहिणी और रविवार ये ध्रुव और स्थिर संज्ञक हैं। इनमें स्थिर कार्य बीजवपन, शान्ति, बागीचा लगाना और आदि शब्द से मृदूसंज्ञक नक्षत्रोक्त कर्म सिद्धि देने वाले होते हैं।

चर संज्ञक नक्षत्र और कृत्य –

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापि चरं चलम्।
तस्मिन् गजादिकारोहो वाटिका गमनादिकम्।। (मु॰चि॰न॰प्र॰)

अर्थात् स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और सोमवार ये चर और चल संज्ञक हैं इनमें हाथी आदि पर .चढ़ना, वाटिका लगाना, यात्रा करना, आदि शब्द से लघुसंज्ञक नक्षत्र में कहा हुआ कर्म शुभ होता है।

उग्र–क्रूर संज्ञक नक्षत्र और कृत्य –

पूर्वात्रयं याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा।
तस्मिन् घाताग्निशाठयानि विषशस्त्रादि सिद्धयति।। (मु॰चि॰म॰न॰प्र॰)

तीनों पूर्वा, भरणी, मघा और मंगलवार ये उग्र और क्रूर संज्ञक हैं। इनमें घात कर्म, अग्निदाह, शठता, विष सम्बन्धित कार्य, आदि शब्द से दारुण नक्षत्रोक्त कर्म शुभ है।

मिश्र संज्ञक साधारण संज्ञक नक्षत्र और कृत्य –

विशाखाग्नेयभे सौम्यो मिश्रं साधारणं स्मृतम्।
तत्राग्निकार्यं मिश्रंच वृषोत्सर्गादि सिद्धये।।

विशाखा, कृत्तिका और बुधवार ये मिश्र और साधारण संज्ञक हैं इनमें अग्नि सम्बन्धित कर्म, मिश्रित कार्य, वृषोत्सर्ग आदि शब्द से उग्र नक्षत्रोक्त कर्म शुभ है।

क्षिप्र–लघु संज्ञक नक्षत्र और कृत्य –

हस्ताश्विपुषयाभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा।
तस्मिन् पण्यरतिज्ञानं भूषाशिल्पकलादिकम्।।

हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित और गुरूवार ये क्षिप्र और लघुसंज्ञक हैं इनमें दुकान, रति, ज्ञान, शिल्प, कलाकर्म, आदि में चर नक्षत्रोक्त शुभ है।

मृदु मैत्री संज्ञक और कृत्य –

मृगान्त्यचित्रा मित्रर्क्षं मृदु मैत्रं भृगुस्तथा।
तत्र गीताम्बरक्रीडामित्रकार्यं विभूषणम्।।

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार ये मृदु और मैत्र नामक हैं इनमें गीत, वस्त्र, क्रीडा, मित्र ये कार्य और भूषण धारण करना शुभ है।

तीक्ष्ण–दारुण संज्ञक और कृत्य –

मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम्।
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम् ।।

मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा और शनिवार ये तीक्ष्ण और दारूण संज्ञक हैं इनमें अभिचार, घात, चुगलपन, पशुओं की शिक्षा, आदि शब्द से बंधनादि शुभ होते हैं।

इसी प्रकार धनिष्ठादि पॉच नक्षत्र जिसे पंचंक कहा जाता है। इन नक्षत्रों में गृह बनाने के लिए तृण, काष्ठ आदि का संग्रह नहीं करना चाहिये।

तिथिवार–नक्षत्रवारोत्पन्न योग बोधक चक्र

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	वार
12	11	10	9	8	7	6	क्रकच योग
7	6	5	4	3	2	1	कुलिक
12	11	5	3	6	8	9	दग्ध
4	6	7	2	8	9	7	विष
12	6	7	8	9	10	11	हुताशन
नन्दा	भद्रा	नन्दा	जया	रिक्ता	भद्रा	पूर्णा	मृत्यु
		जया	भद्रा	पूर्णा	नन्दा	रिक्ता	सिद्धि
मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त	यमघण्ट
भरणी	चित्रा	उ0षा0	धनि0	उ0फा0	ज्येष्ठा	श्रेवती	दग्ध
पू0षा0	आर्द्रा	विशा0	रोहिणी	पुष्य	मघा	मूल	चराख्य
मघा, ध.	विशा0मू0	भरणी, कृ0	पू0षा0, पुन0	उ0षा0 अभि0	रोहिणी, अनुराधा	श्रवण, शत0	यमद्रष्ट
हस्त, मूल, तीनों उत्तरा, पुष्य, अश्विनी	श्रवण, रो0 मृग0,पुष्य अनुराधा	अश्विनी, उ0फा0, कृ0 आश्लेषा	रो0 अनु0 हस्त, कृत्तिका, मृगशिरा	रे0 अनु0 अश्व0 पुन0 पुष्य	श्रे0 अनु0 अश्व0 पुन0 श्रवण	श्रवण रोहिणी स्वाति	सर्वार्थसिद्धि योग
हस्त	मृग	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी	अमृतसिद्धि योग

योग विचार –

विष्कुम्भादि 27 योग अपने–अपने नामतुल्य शुभाशुभ फल देते हैं। चलायमान इन योगों का उपयोग वैदिक कर्मकाण्ड, सन्ध्या पूजन तथा यज्ञादि कर्म में संकल्प लेने के समय होता है। आनन्दादि योग स्थिर है। शुभ कार्य में अशुभ योग के प्रथम चरण त्याग करना चाहिये। वैधृति और व्यतिपात नामक योग सभी कार्यो में वर्जित कहे गये हैं।

परिघ योग का पूर्वार्ध, तथा विष्कुम्भ और वज्र योग में आदि की तीन–तीन घड़ी व्याघात में 9 घड़ी, शूल में 5 घड़ी गण्ड अतिगण्ड में 6 घड़ी का त्याग करना चाहिए।

करण विचार –

सात चलायमान करणों के अन्तर्गत विष्टि नामक करण जो भद्रा संज्ञक हैं। उसमें कृत्याकृत्य विचार अवश्य जानना चाहिये।

भद्रा में अवश्य वर्जनीय –

भद्रायां द्वे न कर्तव्ये, श्रावणी फाल्गुनी तथा।
श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी।। (कृत्यसारसमुच्चय)

भद्रा में श्रावणी (उपाकर्म), रक्षा बन्धन और फाल्गुनी (होलिका दाहादि) नहीं करना चाहिये। क्योंकि भद्रा में श्रावणी करने से राजाओं का नाश और फाल्गुनी करने में ग्राम में अग्निभय होता है।

परिहार –

कुम्भ कर्कद्वये मर्त्ये स्वर्गेऽब्जेऽजात्त्रयेऽलिगे।
स्त्रीधनुर्जूकनकेऽधो भद्रा तत्रैव तत्फलम्।। (मु॰चि॰म॰1/45)

कुम्भ, मीन, कर्क सिंह इन राशियों के चन्द्रमा में मर्त्यलोक में और मेष, वृष, मिथुन और वृश्चिक के चन्द्रमा में स्वर्ग में तथा कन्या, धनु, तुला, और मकर के चन्द्रमा के पाताल में भद्रा रहती है और जहॉ रहती है वहॉ ही फल देती है।

5.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जाना कि पंचांग शब्द स्वयं ही अपना परिचय देता है। पाँच अंगों का समवेत स्वरूप ही पंचांग है। उन पाँच अंगों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं – तिथि, वार, नक्षत्र योग एवं करण। इन पाँचों अंगों के आधार पर किसी भी शुभकार्य हेतु शुभ समय का निर्णय किया जाता है। जहाँ ये अंग हमें शुभाशुभ समय का ज्ञान करातें हैं वहीं हमें आकाश दर्शन में भी सहायक होते हैं। इन अंगों के निरूपण के साथ–साथ ग्रहों की गति, स्थिति एवं चार का ज्ञान पंचांग के माध्यम से अत्यन्त सरल ढंग से किया जाता है। इसलिए आवश्यक हो जाता है कि आकाशीय घटनाओं के साथ–साथ उनके परिणामों का भी उल्लेख कर अधिकाधिक लोगों को अवगत कराया जा सके। इस दृष्टि से ज्योतिष के सिद्धान्त, संहिता एवं होरा स्कन्धों के अनेक व्यावहारिक विषयों का समावेश आधुनिक भारतीय पंचांगों में होने लगा है। आज पंचांग ज्योतिष सम्बन्धी अनेक विषयों का महत्वपूर्ण संकलन भी है। यदि कोई व्यक्ति केवल पंचांगों का ही अध्ययन कर ले तो वह अनेक व्यावहारिक विषयों का ज्ञाता हो सकता है। यही कारण है कि आज पंचांग हमारी जीवन पद्धति के अंग बन चुके हैं।

5.6 पारिभाषिक शब्दावली

पंचांग – तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण रूपी पाँच अंगों के समाहार को पंचांग कहते है।

तिथि – सूर्य एवं चन्द्रमा के द्वादश अंशात्मक गत्यन्तर को तिथि कहते है।

वार – रव्यादितः शनिवार पर्यन्त सप्त वार होते हैं।

भगण – १२ राशियों का एक भगण होता है।

नक्षत्र – न क्षरतीति नक्षत्रम्। अश्विनी से रेवती पर्यन्त २७ नक्षत्र होते हैं।

योग – सूर्य एवं चन्द्र के योग से योगों की उत्पत्ति होती है। आनन्दादि एवं विष्कुम्भादि दो प्रकार के योग होते हैं।

करण – एक तिथि में दो करण होते हैं।

हेम – सोना

अचल – जो स्थिर हो।

5.7 बोध प्रश्न

1. पंचांग का विस्तृत वर्णन कीजिये।
2. मानव जीवन में पंचांग की उपयोगिता पर प्रकाश डालिये।
3. पंचांग का क्या महत्व है?
4. पंचांग से क्या–क्या ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है? स्पष्ट कीजिये।
5. तिथि एवं वारों में कृत्याकृत्य का वर्णन कीजिये।
6. नक्षत्रों में कृत्याकृत्या पर प्रकाश डालिये।

5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. भारतीय ज्योतिष – श्री शंकरबालकृष्णदीक्षित, प्रकाशक– संस्कृत संस्थान, लखनऊ/ मुम्बई प्रेस।
2. संवत्सरावली – टीका – पण्डित हीरालाल मिश्रः, प्रकाशक – भदैनी प्रेस, वाराणसी।
3. विश्व के प्रमुख कालदर्शक – महर्षि अभय कात्यायन, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
4. वृहदवकड़ाचक्रम् – पं0 सीताराम झा, चौखम्भा क्लासिका, वाराणसी।
5. पंचांग विज्ञानम् – प्रोफेसर भास्कर शर्मा, हंसा प्रकाशन, जयपुर।